कुमाऊँ म मन्दिर स्थापत्य- द्वाराहाट के विशेष सन्दर्भ में (7वीं शताब्दी - 12वीं शताब्दी)

डॉ. ज्योति साह *

कुमाऊँ में मन्दिर स्थापत्य की परम्परा छठी–सातवीं शताब्दी से प्रारम्भ हुयी।[1] विविध संस्कृतियों एवं समूहों का स्थल होने के कारण यहाँ की स्थापत्य कला पर भी अनेक प्रादेशिक शैलियों का प्रभाव पड़ा। मन्दिर स्थापत्य के दृष्टिकोण से यहाँ कत्यूरी काल का विशेष महत्व है। कत्यूरी काल (7वीं शताब्दी – 12वीं शताब्दी) को मन्दिर स्थापत्य की दृष्टि से कुमाऊँ का स्वर्ण काल माना जाता है।[2] इस युग में कुमाऊँ में अनेकों स्थलों पर मन्दिर समूहों का निर्माण किया गया, जिनमें जागेश्वर, द्वाराहाट, बैजनाथ, कटारमल, चंपावत, गंगोलीहाट आदि प्रमुख हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से द्वाराहाट के मन्दिर समूह की स्थापत्य शैली का विस्तृत वर्णन करते हुए कुमाऊँ की मन्दिर स्थापत्य शैली पर प्रकाश डाला गया है। द्वाराहाट कुमाऊँ के एक ऐतिहासिक व पुरातात्विक महत्व का स्थल है और यह प्रसिद्ध कत्यूरी राजाओं की एक शाखा की राजधानी रहा है। कुमाऊँ की पर्वत उपत्यकाओं में स्थित द्वाराहाट अल्मोड़ा जिले में रानीखेत से 37 कि.मी. दूर कर्णप्रयाग मार्ग में स्थित है। द्वाराहाट के मन्दिर स्थापत्य के साथ–साथ यह शोधपत्र इस क्षेत्र की धार्मिक एवं सांस्कृतिक इतिहास को भी स्पष्ट करता है।

कुमाऊँ में विविध संस्कृतियों का साथ–साथ विकास हुआ। यहाँ के धार्मिक जीवन में सैद्धान्तिक धर्मों के साथ लोक प्रचलित देवताओं का बाहुल्य है। इन लोक देवताओं को स्थापित करने के लिए 'थान' परम्परा विकसित हुयी। थान परम्परा वर्तमान में भी कुमाऊँ के विभिन्न क्षेत्रों में दिखाई देती है। इसमें तीन प्रस्तर खंडों के ऊपर एक और चपटा पत्थर रखकर छत्र का निर्माण किया जाता है। यह थान अनगढ़ और बैडोल होते हैं। इन्हें द्योली या देवस्थल भी कहा जाता है। कुमाऊँ में मन्दिर स्थापत्य विकास इस थान परम्परा का ही विकास है।[3] 7वीं से 12वीं शताब्दी में कत्यूरी काल में मंदिर स्थापत्य का जो रूप विकसित हुआ, उसे कलाविदों ने पर्वतीय शैली नाम दिया। यह शैली हिमाचल प्रदेश, पंजाब और गढ़वाल के पर्वतीय मन्दिरों से साम्य रखती थी। मूलतः यह उत्तर भारत में प्रचलित नागर शैली के अनुरूप ही है, जिसमें स्थानीय तत्व भी दृष्टिगोचर होते हैं।[4] कत्यूरी काल के मन्दिरों की प्रमुख विशेषता है–

- मन्दिरों का समूह में या एक स्थान पर अनेक मन्दिरों का निमार्ण किया जाता था। प्राचीन पैदल मार्गों के तीन–चार कि.मी. के दायरे पर सांकेतिक एकल मन्दिर भी बनाए जाते थे।[5]
- मन्दिर कलात्मक रूप से उत्कृष्ट हैं, जिसमें तत्कालीन उन्नत आर्थिक स्थिति की स्पष्ट छाप दिखती है।
- कुमाऊँ में कत्यूर काल के मन्दिर शैव सम्प्रदाय के अधिक मात्रा में हैं, यद्यपि साथ में शाक्त और वैष्णव मन्दिर भी निर्मित किये गये हैं।
- मंडप युक्त मंदिरों की संख्या सीमित है और जिन मन्दिरों में मंडप हैं वे अधिकांशतः चतुर्भुजाकार हैं। यद्यपि कुछ मन्दिरों में त्रिरथ मंडप भी मिलते हैं।
- शिखर के ऊपर ताम्र या लकड़ी का विजौरा लगाया जाता था, जिसकी खिड़कियां भी अलंकरण युक्त होती थीं।[6]
- प्रवेशद्वार के ऊपर के शिखर के अग्रभाग शुकनाश तथा द्वारशाखाएं भी अलंकृत किये जाते थे।

---

* एसोसियेट प्रोफेसर, 'इतिहास', दीन दयाल उपाध्याय राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीतापुर

कत्यूरी काल के पश्चात 13वीं से 18वीं सदी तक चन्द शासकों के काल में मन्दिर पूर्व के अलंकृत मन्दिरों की अपेक्षा सादे हैं। इनका गर्भगृह सामान्यतः वर्गाकार प्रदक्षिणापथ रहित होता था तथा गूढ़ मण्डप स्तम्भ रहित होते थे। प्रारम्भिक चंद कालीन मन्दिरों में अलंकृत द्वारशाखाएं तथा शिखर मिलते हैं , जबकि बाद के चंद कालीन मंदिर के द्वारशाखाएं और शिखर भी सादे हैं। 15वीं सदी के मन्दिरों में अर्द्ध मण्डप मिलता है। चंदकाल में पंचदेव परम्परा के पंचायतन मन्दिर बनाए गए। पूर्व मन्दिरों के सदृश इनमें काष्ठ छत्र 'विजौरा' की परम्परा जारी रही।

द्वाराहाट का सम्बन्ध तालेश्वर दानपत्र में उल्लिखित ब्रह्मपुर से जोड़ा जाता है। प्राचीन ब्रह्मपुर बमनपुर के रूप में विकसित होता हुआ बमनपुर बन गया है। द्वाराहाट या हाट बमनपुरी के ब्रह्मपुर होने का एक साक्ष्य मानसखण्ड में मिलता है। ह्वेनसांग के द्वारा ब्रह्मपुर का वर्णन करते हुए वहाँ 10 हिन्दू मन्दिरों तथा पांच बौद्ध बिहारों का उल्लेख किया गया है तथा परिधि 20 या 60 कि.मी. बताई गयी है, जो द्वाराहाट की परिधि के लगभग है। अतः ह्वेनसांग द्वारा वर्णित ब्रह्मपुर द्वाराहाट या हाट बमनपुरी का ही प्राचीन स्वरूप होगा।[7] यहाँ लगभग 64–65 देवालय व बाबडियाँ हैं। जनश्रुति के अनुसार यहाँ 365 मन्दिर व 365 नौले कत्यूरी राजाओं ने बनवाये थे।[8] वर्तमान में यहाँ लगभग 30 प्रस्तर मन्दिरों के अवशेष प्राप्त होते हैं, जो द्वाराहाट में यत्र तत्र बिखरे हुए हैं। एटकिंसन के अनुसार वे तुर्क की टोपी के सदृश ऊपर की ओर उठते हुए से हैं तथा साधारण पिरामिडनुमा खम्भों पर आधारित एक साधारण ढ़ांचा मात्र हैं।[9] ये मन्दिर इष्टिका निर्मित वेदियों पर बने हैं। यहाँ के निवासियों के अनुसार इन मन्दिरों के लिये पत्थर चन्द्रागिरी पवर्त के प्रयुक्त किये जाते थे।

गूजर देव मन्दिरः– द्वाराहाट के प्राचीन मन्दिरों में गूजरदेव मन्दिर का सर्वप्रमुख स्थान है। यह स्याल्दे पोखर तथा बस स्टेशन से 110 मी. की दूरी पर स्थित है। यह लगभग 12वीं शताब्दी में निर्मित हुआ था। कत्यूरी शासन में गूजरदेव ने इसका निर्माण कराया था।[10]

वर्तमान में मन्दिर का शिखर तथा सामने का भाग नष्ट हो चुके हैं तथा मण्डप भी नहीं हैं। इसका अधोभाग, जिसमें तीन ओर की दीवारें तथा चौकी का भाग सम्मिलित है, शेष रह गया है। 10 फीट ऊँचा यह अवशेषित भाग ही इसके महत्व को स्पष्ट करने में पूर्णतः समर्थ है। इसके अवशेषों को देखकर लगता है कि यह कहीं अधिक विशाल रहा होगा, जिसमें मुख्य मन्दिर के अतिरिक्त मण्डप तथा अन्य भाग भी रहे होंगे।

यह मन्दिर 88" लम्बे तथा 55" चौड़े चबूतरे पर अवस्थित है जिसमें प्रवेश हेतु सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। यह चबूतरे के ऊपर 4 या 5 फीट के स्तम्भों पर अवस्थित है। दूसरी सीढ़ी में दोनों ओर शंखयुक्त अर्धचन्द्र बने हैं। दो प्रतिमाएं, जो हाथों में गदा व धनुष धारण किये हुए हैं, द्वार के दोनों ओर स्थित हैं। मन्दिर की बाह्य सजावट अत्यन्त सुन्दर है। समस्त दीवारों पर देवताओं व हाथियों की सुन्दर मूर्तियाँ अंकित है। स्तम्भ के ऊपर चार सीधे सांचों में सुन्दर हाथियों के झुण्ड बने हैं। विभिन्न स्थानों पर स्थित गणेश तथा शिव सहित अनेकों देवताओं की मूर्तियाँ विश्राम तथा युद्ध की मुद्राओं में प्रदर्शित की गयी है। कुछ मूर्तियाँ नग्न अवस्था में हैं, अथवा पारदर्शी वस्त्रों से ढकी हुई हैं। इसे नौटियाल ने जैन कला का प्रभाव बताया है। गौर्ड्ज भी इस मन्दिर पर जैनियों का प्रभाव स्वीकार करते हैं।

मन्दिर का गर्भग्रह एक सपाट प्रस्तर खण्ड पर है। इसके ऊपर ही दो साधारण वृत्तों से घिरा हुआ स्वास्तिक प्रतीक अंकित है। यहां मण्डप त्रिरथ है। मन्दिर में अन्य शैव मन्दिरों के सदृश सोमसूत्र अंकित नहीं है। प्रवेश द्वार के सम्मुख एक 12 फीट लम्बा आमलक पड़ा है।

नौटियाल के अनुसार जैनी शैली से प्रभावित तत्कालीन गुजरात व राजपूताना के मन्दिर इस गूजरदेव मन्दिर से अत्यधिक समता प्रकट करते हैं।[11]

गूजरदेव मन्दिर में शिवलिंग पूजन ही मुख्य धार्मिक आधार था। वर्तमान में मन्दिर के नष्ट होने के कारण यहाँ पूजन कार्य नहीं होता है। यहाँ के निवासियों का विश्वास है कि पाण्डुखोली में निवास करते समय पाण्डवों ने बनवास काल में इसी स्थान को अपना धनागार बनाया था। उसी धनागार के अवशेष पर गूजरदेव साह ने यह मन्दिर बनवाया।

मृत्युन्जय मन्दिरः– द्वाराहाट के पश्चिम में मुख्य मार्ग पर ही अवस्थित मृत्युन्जय मन्दिर शैव मन्दिर है। यह मन्दिर ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में निर्मित हुआ होगा। नौटियाल के अनुसार यह 1000 ई. से 1020 ई. के मध्य कभी निर्मित हुआ होगा।[12]

यहाँ एक शिवलिंग तथा एक शिवपार्वती की प्रतिमा प्राप्त हुई है। इस शिवलिंग के चारों ओर एक गड्ढ़ा है। यहाँ के लोगों की मान्यता है कि यदि इस गड्ढ़े में पानी भरकर शिवलिंग को ढक दिया जाय तो वर्षा हो जाती है। मृत्युन्जय मन्दिर प्रस्तरखण्डों को जोड़कर साधारण शैली में निर्मित हुआ है। जिसमें शिल्पकला की बारीकियों का अभाव है। इसका शिखर पूर्णरूप से वक्रता लिये हुए है किन्तु नौटियाल के अनुसार यह द्वाराहाट के ही केदारेश्वर मन्दिर के शिखर की भांति बारीक नहीं हैं।[13] मन्दिर का मण्डप सपाट तल युक्त एक खुला कक्ष है। तीन देवालय, जो जीर्णशीर्ण अवस्था में हैं इस मन्दिर के समीप स्थित है तथा एक आंगन से आपस में मिलते हैं। इन मन्दिरों में से बांयी ओर स्थित मन्दिर में स्तम्भ युक्त चबूतरा है, जिसे आसन या काकासन कहा जाता है। नौटियाल ने इसकी समता राजपूताना के औसिया मन्दिर और मध्य भारत के कुछ अन्य मन्दिरों से की है। मुख्य रूप से इसकी बनावट शैली तथा स्वरूप बहुत कुछ जागेश्वर के तृतीय मन्दिर समूह के सदृश हैं।

रत्नदेव मन्दिरः– यह गूजर देव मन्दिर के पश्चिम में स्थित है और इसके उत्तर में कचेरी देवाल समूह स्थित है। रत्नदेव मन्दिर में आर्य शैली के सात मन्दिरों का समूह है। इस मन्दिर के नामकरण तथा निर्माता आदि के विषय में कोई स्थानीय परम्परा अथवा शिलालेख सम्बन्धी सूचना नहीं मिलती। यद्यपि नौटियाल ने इसका निर्माणकाल 12वीं शताब्दी पूर्वाद्ध बताया है।

यह मन्दिर अन्य मन्दिरों के ही सदृश है, किन्तु इसका शिखर अन्य मन्दिरों की अपेक्षा नुकीला है। दक्षिणी देवालय के सम्मुख एक प्रवेश द्वार अभी भी विद्यमान है। दक्षिण दिशा के मन्दिरों का एक सम्मिलत बरामदा है, जो स्वतंत्र स्तम्भों की दो पंक्तियों पर अवलम्बित है। नौटियाल ने इस मन्दिर समूह की खजुराहों के मन्दिरों से साम्यता प्रकट की है।[14]

कचेरी देवाल– गूजरदेव मन्दिर के पश्चिम में मन्दिरों का एक समूह है जिसे कचेरी देवाल कहते हैं। इस समूह में कुल 12 मन्दिर हैं जो सुरक्षित हैं। बी.डी. पाण्डे के अनुसार सम्भवतः राजाओं का न्यायालय था।[15] यह मन्दिर समूह लगभग 12वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बना होगा। यद्यपि यहाँ किसी शीर्ष फलक आदि के द्वारा तिथि निर्धारण का कोई संकेत नहीं मिलता।

इन देवालयों का आकार लघु है। इनमें से पूर्व में स्थित पांच देवालय जो पंक्तिबद्ध हैं, के समक्ष एक सम्मिलित मण्डप है। मण्डप की छत सुन्दर स्तम्भों पर आधारित है। पूर्वी देवालयों का सम्मिलित मण्डप अन्य मन्दिरों के प्रवेश द्वार के रूप में अधस्थित है। यहाँ के दो देवालय अन्य देवालयों से भिन्न हैं। यद्यपि उनका आकार अन्य देवालयों के ही सदृश है किन्तु अन्य देवालयों के तीखे बारीक शिखरों की अपेक्षा इन दो देवालयों का शिखर जांघा के एकदम बराबर है। बाढ़ा अन्य मन्दिरों की भांति तीन भागों में विभक्त है। स्तम्भ साधारण है किन्तु उनके ऊर्ध्व भाग में सुन्दर ब्रेकेट्स बने हैं। यह स्तम्भ छिछले हैं जिनकी शैली ओसिया के मन्दिर से मिलती है।[16] प्रवेश द्वार के शीर्ष फलक पर देवी लक्ष्मी की प्रतिमा उत्कीर्ण है तथा अन्य तीनों शीर्ष फलकों पर गणेश की प्रतिमा उत्कीर्ण है मन्दिर के भीतरी भाग में प्रतिष्ठित देवी देवताओं की प्रतिमाओं के नष्ट होने या लुप्त हो जाने से यह मन्दिर समूह अपनी पूर्व प्रतिष्ठा खो चुका है।

मान्या मन्दिरः– कचेरी देवाल मन्दिर समूह के दक्षिण पश्चिम में सात जीर्ण शीर्ण मन्दिरों के खण्डहर हैं जो मन्या वर्ग समूह कहलाता है। मान्या मन्दिर द्वाराहाट के अन्य मन्दिरों से कुछ भिन्न प्रकार के हैं इनका फैलाव अन्य मन्दिरों से भिन्न प्रकार का है। इसमें जांघा साधारण व समतल है, किन्तु बाढ़ा विअंगा ही है। शिखरों में मात्र पंच भूमि आम्रफलक है। शीर्ष भाग में आम्रफलक (आमलक) के सर्वोपरि भाग में कलश निर्मित है। इस समूह के अधिकांश देवालय स्तम्भ युक्त बरामदों से रहित हैं। नौटियाल के अनुसार यह समूह पूर्णरूपेण पंचायतन शैली पर आधारित कहा जा सकता है।[17]

द्वार के एक ओर शीर्ष फलकों में गंगा–यमुना को प्रदर्शित करने वाले जम्बू तथा गणेश को चित्रित किया गया है तथा दूसरी ओर के शीर्ष फलकों पर विषणु के अवतारों का अंकन है। एक मन्दिर की चौखट में पद्मासन में आसीन एक मूर्ति अंकित है।

बद्रीनाथ मन्दिरः– मृत्युन्जय मन्दिर में पश्चिम में बद्रीनाथ मन्दिर अवस्थित है। द्वाराहाट के प्राचीन मन्दिरों में यह मन्दिर आज भी प्रतिष्ठत है और विशेष अवसरों में यहाँ पूजन कार्य भी किया जाता है। इस मन्दिर का सम्बन्ध शंकराचार्य से स्थापित किया जाता है। गढ़वाल के बद्रीनाथ मन्दिर की व्यवस्था पर ही यहाँ के मन्दिरों की व्यवस्था आधारित है, जो दक्षिण के रावल लोगों के नियन्त्रण में रहती है।[18]

यह मूलरूप से वैष्णव मन्दिर है। इसके प्रमुख द्वार के शीर्ष फलक में गणेश के ऊपर गंगा यमुना का चित्रण किया गया है। दो भुजाओं वाली विष्णु की प्रतिमा इसमें प्रतिष्ठित की गयी है। मन्दिर की चौखट पर विष्णु, गणेश की तथा एक चर्तुभुजी देव प्रतिमा है, जो सम्भवतः विष्णु की ही प्रतिमा है, अंकित है। जनश्रुति के अनुसार इसके 50 फीट ऊँचे शीर्ष में तराशे हुए गोल आभूषण वाले रत्नों से जड़े थे, जो सम्भवतः रूहेलों द्वारा लूट लिये गये।[19]

इस मन्दिर के पार्श्व में तीन अन्य प्राचीन मन्दिर हैं जो एक बरामदे से परस्पर सम्बन्ध स्थापित करते हैं। यह बरामदा धर्मशाला कहलाता है। इसमें प्राप्त मूर्तियों में उत्कीर्ण लेखों की तिथियों से ऐसा प्रतीत होता है कि इसका विभिन्न कालों में पुर्ननिर्माण होता रहा होगा। यहाँ प्राप्त विष्णु प्रतिमा में 1105 शक (1183 ई.) की तिथि अंकित है। एक अन्य अभिलेख जो धर्मशाला की उत्तरी दीवार पर उत्कीर्ण है, जिसमें मन्दिर के निर्माण तथा आय व्यय का भी विवरण प्राप्त होता है। अभिलेख में 1744 शक के आषाढ़ महीने के कृष्ण पक्षकी 11वीं तिथि अंकित है।[20]

केदारनाथः मन्दिरः– बद्रीनाथ मन्दिर के ठीक सामने दक्षिण दिशा में लगभग 11– 12वीं शताब्दी में निर्मित केदारनाथ का मन्दिर स्थित है। यहाँ शिव की पूजा होती है। यहाँ भी बद्रीनाथ मन्दिर के सदृश विशेष अवसरों पर पूजन किया जाता है। इस मन्दिर का शीर्ष भाग अत्यन्त बारीक है। इसमें छिछली हुई चौखट है यहाँ के शिवलिंग की स्थापना के विषय में जनश्रुति प्रचलित है कि वह शंकराचार्य ने की। यहाँ पीतल व पाषाण की दो मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं, जो अल्मोड़ा संग्रहालय में हैं।

वनरदेवालः– वनदेव मन्दिर घटगाढ़ में स्थित है। इसके समीप से खिरी नामक छोटी सी नदी प्रवाहित होती है जो केवल वर्षा ऋतु में ही बहती है। यह सम्भवतः किसी वन देवता का मन्दिर होगा। यह भी कहा जाता है कि गूजरदेव मन्दिर की परम्परा के अनुरूप इस मन्दिर का नामकरण किसी वनरदेव के नाम पर हुआ होगा जो सम्भवतः इसका संस्थापक होगा। इस मन्दिर का स्थापत्य साधारण व अन्य मन्दिरों की अपेक्षा निम्न स्तर का है जो आकृर्षित भी नहीं करता है।

कुटुम्बरी देवालः– यह द्वाराहाट के सभी मन्दिरों के पश्चिम में स्थित है तथा कुछ ऊँचाई पर स्थित है। वह सम्भवतः किसी स्त्री देवता का मन्दिर है। इसके निर्माण के विषय में कथा प्रचलित है कि धान कूटने वाली किसी बुढ़िया ने इस मन्दिर का निर्माण कराया था।[21] धान कूटने वाली बुढ़िया से कुटटन बूढी तथा फिर कुटुम्भरी बनकर मन्दिर का नाम कुटुम्बरी देवाल पड़ा। यह पश्चिमोत्तर शिखर वाला मन्दिर है। इसमें कोई शीर्ष फलक या पत्थर नहीं है। इसके द्वार जम्ब भी नहीं है। यह खण्डहर मात्र शेष है।

शीतला देवी का मन्दिरः– गूजरदेव मन्दिर के दक्षिण पूर्व में स्याल्दे पोखार (शीतला पुष्कर) के दक्षिण में शीतला देवी का पवित्र मन्दिर है। जलाशय का नाम शीतला पुष्कर मन्दिर के नाम पर ही पड़ा। यह 17वीं 18वीं शती का है तथा ईष्टिका निर्मित मन्दिर है। इसका समय समय पर पुर्ननिर्माण होता रहा है। इसके चारों ओर बरामदा है जिसकी छत स्तम्भों पर आधारित है। यहाँ बैशाख की संक्रन्ति को मेला लगता है तथा देवी को भेट चढ़ाई जाती है।

कालिका देवी का मन्दिरः– यह मन्दिर थार्प टीले के उत्तर में तथा मिशनरी कम्पाउण्ड में पश्चिम में स्थित है। काली का मन्दिर होने के कारण समीपवर्ती समस्त क्षेत्र कालीखोली (काली का निवास) कहलाता है। यह मन्दिर ईटों से निर्मित एक साधारण कक्ष मात्र है यहाँ प्रतिष्ठित काली की मूर्ति राजा गूर्जर देव के काल संवत 1179 (1257 ई.) की हैं।[22] यमुनादत्त वैष्णव के अनुसार काली की मूर्ति में अनन्तपाल का 1132 (1210 ई.) का लेख उत्कीर्ण है, जिसमें बालेश्वर मन्दिर के लेख में दिये राजाओं के नामों का उल्लेख है।[23]

कोट कांगड़ा देवी का मन्दिरः– यह स्याल्दे पोखर (शीतला पुष्कर) के उत्तर में अवस्थित है। द्वाराहाट के चौधरियों का कथन है कि उनके पूर्वज कांगड़ा नगर कोट के थे, जो कत्यूरी राजाओं के काल में यहाँ

आकर बसे। वहाँ की देवी कोट कांगड़ा ही उनकी कुल देवी है। इसके अनुसार यह मन्दिर चौधरियों का मन्दिर कहा जाता है। इसमें एक बड़ा बारमदा भी बना है जो चौधरियों के द्वारा निर्मित है। राजा ब्रह्मदेव व धामदेव भी कुलदेवी का पूजन करते थे।[24]

विभाण्डेश्वर मन्दिरः– द्वाराहाट क्षेत्र के अन्तर्गत सर्वाधिक पुरातन मन्दिर 319 ई. का विभाण्डेश्वर मन्दिर हैं। श्मसानघाट के समीप तथा द्वाराहाट के पश्चिम में स्थित है। यह शैव मन्दिर है जहाँ विषुवत संक्रन्ति का मेला लगता है। इस मन्दिर का निर्माण प्रारिम्भक कत्यूरी शासकों के शासन में हुआ था।[25] यहाँ चन्दकालीन ताम्रपत्र भी प्राप्त हुआ है। इस ताम्रपत्र में गूंठ में दान दी गयी भूमि का वर्णन है। चन्दकाल में इस मन्दिर का पुर्ननिर्माण भी किया गया।

इसके अतिरिक्त भी कुछ अन्य देवालय हैं जो साधारण शैली के हैं। इनमें गणेश का मन्दिर तथा वनरदेव के समीपस्थ लक्ष्मी का मन्दिर प्रमुख है।

द्वाराहाट के सभी प्रमुख पुरातन मन्दिरों का निर्माण 11वीं से 13वीं शताब्दी तक हो गया था। एटकिंसन के अनुसार यह 11वीं शताब्दी तक हो गया था। किन्तु गोट्ज के अनुसार प्रथम भवन निर्माणकाल 1029 से 1048 ई. व द्वितीय काल 1143 से 1219 के मध्य मानना चाहिये।[26]

यहाँ के अधिकांश मन्दिरों की मध्य भारत व राजपूताना के मन्दिरों से समानता होने के कारण विद्वानों का मानना है कि द्वाराहाट में मन्दिर निर्माण करने हेतु कलाकार बाहर से बुलाये गये थे। परन्तु कुछ लोगों का मानना है कि यह कलाकार यहाँ के निवासी ही थी। जिन्हें "ओड" कहा जाता है। यह सम्भवताः मध्य भारत व राजपूताना से शिल्प व स्थापत्य कला की शिक्षा प्राप्त करके आते थे।

उपरोक्त मंदिर स्थापत्य कुमाऊँ की पुरातात्विक और सांस्कृतिक धरोहर हैं, इनको संरक्षित करने और इनका मौलिक स्वरूप बनाए रखने की आवश्यकता है।

---

[1] गोपेश्वर,गणपति नाग, 1966–67, एनुअल रिपोर्ट ऑफ इंडियन इपिग्राफी
[2] गोपेश्वर,गणपति नाग, 1966–67, एनुअल रिपोर्ट ऑफ इंडियन इपिग्राफी
[3] क्रैमरिश, स्टेला–द हिन्दू टैम्पल, भाग'2,1976, पृष्ठ–151
[4] उपाध्याय,भगवत शरण– भारतीय कला की भूमिका,1980 पृष्ठ–6–7
[5] जोशी, महेश्वर प्रसाद–उपरोक्त,पृष्ठ–39
[6] जोशी, महेश्वर प्रसाद–उपरोक्त,पृष्ठ–39
[7] जोशी, त्रिपाठी,ताराचन्द्र–उत्तराखण्ड का ऐतिहासिक भूगोल, पृष्ठ–51
[8] सिंह,राम–स्याल्दे बिखौती 'रानीखेत स्मारिका, 1987
[9] एडविन टी, एटकिन्सन– द हिमालयन गजेटियर, वॉल्यूम तृतीय भाग प्रथम, पृष्ठ–220
[10] बी.डी. पाण्डे– कुमाऊँ का इतिहास, पृष्ठ–95
[11] नौटियाल,के0पी0–द आर्कियोलॉजी ऑफ कुमाऊँ, भाग–3 ,पृष्ठ–111–112
[12] उपरोक्त,पृष्ठ–104
[13] उपरोक्त, पृष्ठ–93
[14] उपरोक्त, पृष्ठ–97
[15] बी. डी. पाण्डे– वही पृष्ठ–95 तथा वाल्टन ने अपने अल्मोड़ा ए गजेटियर में इसे कोर्ट टैम्पल्स कहा है।
[16] नौटियाल,के0पी0–द आर्कियोलॉजी ऑफ कुमाऊँ, भाग–3 ,पृष्ठ–96
[17] उपरोक्त, पृष्ठ–97
[18] वाल्टन– अलमोड़ा–ए गजेटियर, भाग–35, पृष्ठ–241
[19] एडविन टी, एटकिन्सन– द हिमालयन गजेटियर, वॉल्यूम तृतीय भाग प्रथम, पृष्ठ–222
[20] रानीखेत स्मारिका (शरदोत्सव–86) द्वाराहाट के पुरातत्व मन्दिर।
[21] बी.डी. पाण्डे– वही–पृष्ठ–95
[22] बी.डी. पाण्डे– वही पृष्ठ–224
[23] वैष्णव, यमुनादत्त–संस्कृति संगम उत्तराचंल – पृष्ठ– 89
[24] एडविन टी, एटकिन्सन– द हिमालयन गजेटियर, वॉल्यूम तृतीय भाग प्रथम, पृष्ठ–223
[25] बी.डी. पाण्डे– वहीं – पृष्ठ– 224
[26] नौटियाल,के0पी0–द आर्कियोलॉजी ऑफ कुमाऊँ, भाग–3 ,पृष्ठ–104–105